

श्री गणेश चालीसा

रचयिता -
पं. श्रीगदाधर पारीक

खेमराज श्रीकृष्णदास
प्रकाशन

संस्करण- सन् २००० सम्वत् २०५७

मूल्य ४ रुपये मात्र

Printed by Shri Sanjay Bajaj for M / s Khemraj Shrikrishnadass proprietors Shri Venkateshwar press Mumbai 400 004. at their Shri Venkateshwar press, 66, Hadapsar Industrial Estate, Pune-411013.

श्रीगणेश चालीसा

॥ दोहा ॥

एकदन्त शुभ गजवदन, विघ्न विनाशक नाम ।
श्रीगणेश सिद्धि सदन, गणनायक सुखधाम ॥
मंगलमूर्ति महान् श्री, ऋद्धि-सिद्धि दातार ।
सब देवन में आपको, प्रथम पूज्य अधिकार ॥

॥ चौपाई ॥

वक्रतुण्ड श्री सिद्ध विनायक ।
जय गणेश सुख सम्पत्ति दायक ॥
गिरिजा नन्दन, सब गुण सागर ।
भक्तजनों के भाग्य उजागर ॥

श्रीगणेश गणपति सुख दाता ।
सम्पति, सुत सौभाग्य प्रदाता ॥
राम नाम में दृढ़ विश्वासा ।
श्रीमन् नारायण प्रिय दासा ॥
मोदक प्रिय मूषक है, वाहन ।
स्मरण मात्र सब विघ्न नशावन ॥

लम्बोदर पीताम्बर धारी ।
भाल त्रिपुण्ड्र सुशोभित भारी ॥
मुक्ता - पुष्पमाल गल शोभित ।
महाकाय भक्तन मन मोहित ॥
सुखकर्ता, दुःखहर्ता देवा ।
सदा करे सन्तन जन सेवा ॥

शरणागत रक्षक गणनायक ।
भक्तजनों के सदा सहायक ॥
सकल शास्त्र सब विद्या ज्ञाता ।
धर्म प्रवक्ता जग विख्याता ॥
'महाभारत' श्री व्यास बनाया ।
तब लेखन हित तुम्हें बुलाया ॥

शुभ कार्यों में सब नर - नारी ।
प्रथम वन्दना करें तुम्हारी ॥
मिट जाती बाधायें सारी ।
तुम हो सकल सिद्धि अधिकारी ।
श्री गणेश के जो गुण गावे ॥
उनके कार्य सफल हो जावे ॥

जो श्रद्धा से करें प्रार्थना ।
उनकी होती सिद्ध कामना ॥
श्री गणपति के जो गुण गाते ।
वे जन सकल पदारथ पाते ॥
जय गणेश - जय गणपति देवा ।
तीन लोक करते तब सेवा ॥

मास भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी ।
श्री गणनायक प्रकट जयन्ती ॥
श्रद्धा से सब भक्त मनाते ।
दिव्य चरित महिमा यश गाते ॥
श्री गणेश निज भक्त सहायक ।
विघ्न विनाशक मङ्गल दायक ॥

रणथम्भोर दुर्ग गण नायक ।
महाराष्ट्र के अष्ट विनायक ।।
वेद - पुराण - शास्त्र यश गावे ।
श्री गणेश सब प्रथम मनावे ।।
विघ्नेश्वर श्री सुरप्रिय स्वामी ।
भक्त करें जय गान स्मरामि ।।

सर्वाभीष्ट सिद्धि फल दायक।
मोदक प्रिय गणपति गणनायक ॥
भालचन्द्र गजमुख शुभकारी ।
पहले पूजा होत तुम्हारी ॥
भक्तजनों को शुभ वरदायक ।
श्री गणेश जय वरद विनायक ॥

श्री गणेश महिमा अति भारी ।
इससे परिचित सब नरनारी ।।
गणपति की महिमा सब गाते ।
ऋद्धि सिद्धि यश वैभव पाते ।।
संकट में जो गणपति ध्यावे ।
उनके सर्व कष्ट कट जावे ।।

ऋद्धि सिद्धि बुद्धि बल दायक ।
सदा सर्वदा विजय प्रदायक ।।
वृन्दावन के सिद्ध विनायक ।
श्री गणेश, गणपति, गणनायक ।।
निध्न विनाशक, नाम तुम्हारा ।
करो सिद्ध सब कार्य हमारा ।।

सब पर कृपा सदा प्रभु करना ।
दुःख दारिद्र्य शोक सब हरना ॥
श्री मङ्गल विग्रह सुखकारी ।
विनय करो स्वीकार हमारी ॥
पत्र पुष्प फल जल ले कर में ।
पूजा करें सदा हम घर में ॥

जो यह पठन करें सौ बारा।
उन पर गणपति कृपा अपारा॥
एक पाठ भी जो नित करते।
उनकी सब विपदायें हरते॥
रोग शोक बन्धन कट जाते।
सुख सम्पति सन्तति यश पाते॥

शुभ मङ्गल सुन्दर फल पावे ।
'श्री गणेश' चालीसा गावे ॥
सफल गजानन करें कामना ।
भक्त 'गदाधर' रचित प्रार्थना ॥

॥ दोहा ॥

श्रीगणेश गणपति प्रभो ! गणनायक गणराज ।
करो सफल मम कामना, विघ्नेश्वर महाराज ॥

॥ श्री गणेशजी महाराज की जय ॥

श्रीगणेशजी की आरती

आरती जय गज वदन विनायक। भक्तजनों के सदा सहायक ॥

श्रीगणेश शुभ मंगल देवा।
सुर नर मुनि सब करते सेवा ॥
दुःखहर, सुखकर विघ्न विनाशक।
विद्या बुद्धि ज्ञान प्रकाशक ॥

ऋद्धि सिद्धि सब सौख्य प्रदायक। आरती जय गज वदन विनायक

हाथ जोड़ हम भक्त पुकारे।
दूर करो सब कष्ट हमारे ॥
सुख सम्पत्ति सब सिद्धि प्रदाता।
श्री गणेश स्वामी सुख दाता ॥

जय गणेश जय मंगल दायक। आरती जय गज वदन विनायक

पत्र पुष्प फल भेंट चढ़ाये ।
मोदक का प्रिय भोग लगाये ॥
घृत दीपक कर्पूर थाल धर ।
मंगल आरती दिव्य सजाकर ॥
करें आरती जय गण नायक । आरती जय गज वदन विनायक ।
भक्त सभी दर्शन हित आये ।
मंगल आरती सब मिल गाये ॥
श्रद्धा से सब शीश झुकायें ।
करो कृपा सुख सम्पत्ति पायें ॥
भक्त 'गदाधर' आरती गायक । आरती जय गज वदन विनायक
हम सब हैं श्रीआरती गायक ।
कृपा करो जय वरद विनायक ॥

पुस्तकें मिलने के स्थान

१) खेमराज श्रीकृष्णदास,
श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
खेतवाडी, मुंबई - ४०० ००४.

२) खेमराज श्रीकृष्णदास,
६६, हडपसर इण्डस्ट्रिअल इस्टेट
पुणे - ४११ ०१३.

३) गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास
लक्ष्मीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
व बुक डिपो,
अहिल्याबाई चौक, कल्याण
(जि. ठाणे - महाराष्ट्र)

४) खेमराज श्रीकृष्णदास,
चौक - वाराणसी (उ.प्र.)

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS

